गज़ल

दिखा देते हो रूख जब सांवरे सरकार थोड़ा सा
तो भर लेती हैं आंखे शरबते दीदार थोड़ा सा

1– ये खिल जाते हैं जब
आंसू के कतरे पुष्प बन बन कर
खिला देते हैं दिल में प्रेम का गुलजार थोड़ा सा

2–जरा मस्ती के झोंको में
मिली आंखें तो मिलते ही
छलक पड़ता है प्यालों से तुम्हारा प्यार थोड़ा सा

3–चले बिकने पे अश्कों के गौहर
मुझसे यह कह कह कर
कि अब देखेंगे करुणा कर का बाजार थोड़ा सा

4– गिरे डग बिंदू पृथ्वी पर
तो बनके हरफ यों बोले
पतित पावन से लिखवाते हैं हम इकरार थोड़ा सा